Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AFMA–102

M.A. (Final) Examination, 2023

HINDI

Paper - II

(आधुनिक काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) साकेत के 'नवम् सर्ग' के आधार पर 'नारी भावना' विषय पर प्रकाश डालिए

   (ii) साकेत के 'नवम् सर्ग' में प्रकृति-चित्रण विषय पर टिप्पणी लिखिए।

   (iii) कामायनी के उदात्त पात्र को परिभाषित कीजिए।

   (iv) कामायनी की प्रासंगिकता को अपने शब्दों में लिखिए।

(v) राम की शक्ति पूजा के सन्देश पर प्रकाश डालिए।

(vi) असाध्य वीणा का आधार स्रोत क्या है ?

(vii) शमशेर बहादुर की 'मकई-से वे लाल गेहूँ तलवे' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

(viii) राजेश जोशी की 'चाँद की वर्तनी' कविता पर टिप्पणी लिखिए।

(ix) कनुप्रिया की दृष्टि से जीवन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(x) कनुप्रिया में आधुनिकता बोध विषय पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ब

2. ''सींचे बस मालिनें, कलश लें, कोई न ले कर्तरी,
शाखें फूलें फलें यथेच्छ बढ़के, फैलें लताएँ हरी।
क्रीड़ा-कानन-शैल यंत्र जल से संसिक्त होता रहे,
मेरे जीवन का, चलो सखि, वहीं सोता भिगोता बहे।''

3. ओं चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की प्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप-सी मतवाली।
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खललेखा,
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, औ जल माया की चल-रेखा।
इस ग्रह कक्षा की हलचल, री गरला-तरल की लघु लहरी,
जरा अमर जीवन की, और न कुछ सुनने वाली बहरी।

4. धिक् जीवन को जो पाता ही आया है विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका;
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय।

5. सीधा तीर-सा, जो रुका हुआ लगता हो
कि जैसा ध्रुव नक्षत्र भी न लगे,
एक एकनिष्ठ, स्थिर, कालोपरि

भाव, भावोपरि
सुख, आनंदोपरि
सत्य सत्यासत्योपरि
मैं तेरे भी ओ 'काल' उपर!
सौन्दर्य यही तो है, जो तू नहीं है, ओ काल।

6. अस्पताल में मरीज छोड़कर आ नहीं सकता तीमारदार
दूसरे दिन कौन बताएगा कि वह कहाँ गया
निष्कासित होते हुए मैंने उसे देखा था
जयपुर-अधिवेशन जब समेटा जा रहा था
जो मजूर लगे हुए थे कुर्सी ढोने में
उन्होंने देखा एक कोने में बैठा है
अजय अपमानित
वह उसे छोड़ गए
कुर्सी को
सन्नाटा छा गया।

7. लेकिन जब तुम्हीं ने बन्धु
तेज से प्रदीप्त होकर इन्द्र को ललकारा है,
कालिय की खोज में विषैली यमुना को मथ डाला है
तो मुझे अकस्मात लगा है
कि मेरे अंग-अंग से ज्योति फूटी पड़ रही है
तुम्हारी शक्ति तो मैं ही हूँ
तुम्हारा सम्बल
तुम्हारी योगमाया
इस निखिल पारावार में ही परिव्याप्त हूँ
विराट्
सीमाहीन,
अदम्य,
दुर्दान्त;

8. मैं इस बरगद के पास खड़ा हूँ।

मेरा यह चेहरा

घुलता है जाने किस अथाह गंभीर, साँवले जल से,

झुके हुए गुमसुम टूटे हुए घरों के

तिमिर अतल से

घुलता है मन यह।

रात्रि के श्यामल ओस से क्षालित

कोई गुरु गंभीर महान् अस्तित्व

महकता है लगातार

मानो खंडहर-प्रसारों में उद्यान

गुलाब-चमेली के, रात्रि तिमिर में,

महकते हों, महकते ही रहते हों हर पल।

किंतु वे उद्यान कहाँ हैं,

अंधेरे में पता नहीं चलता

मात्र सुगंध है सब ओर,

पर उस महक-लहर में

कोई छिपी वेदना, कोई गुप्त चिंता

छटपटा रही है।

खण्ड–स

9. कामायनी का परिचय देते हुए उसकी प्रासंगिकता एवं उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। 10+10=20

10. राम की शक्ति पूजा के कथानक प्रेरणा स्रोत, मौलिक उद्‌भावना एवं उद्‌देश्य पर विचार व्यक्त कीजिए। 4+8+8=20

11. नन्द किशोर आचार्य की रचना दृष्टि एवं उनकी कविताओं के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए। 8+12=20

12. धर्मवीर भारती कृत 'कनुप्रिया' की मूल विषय वस्तु बताते हुए कनुप्रिया में मिथकीय चेतना पर निबन्ध लिखिए। 10+10=20